संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. भाऊसाहेब नवनाथ नवले का ''**अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना**'' लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

डॉ. अर्जुन चव्हाण

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

स्थान - कोल्हापुर
तिथि - 18 DEC 2001

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
कोल्हापुर - 416 004
दि. : 18 दिसंबर, 2001

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. भाऊसाहेब नवनाथ नवले ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए **''अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना''** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ लिखा है । यह उनकी मौलिक रचना है । पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

स्थान - कोल्हापुर.
तिथि - 18 DEC 2001

प्र ख्या प न

''अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध-छात्र

(श्री. भाऊसाहेब नवनाथ नवले)

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 18 DEC 2001

उपन्यासकार

अब्दुल बिस्मिल्लाह

(चित्र : साताप्पा ल. चव्हाण.)

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

प्राक्कथन

प्राक्कथन

सच है कि अन्य विधाओं की अपेक्षा कथा-साहित्य में मेरी शुरू से अधिक रूचि रही है । अध्ययन के सिलसिले में मैंने प्रेमचंद का 'रंगभूमि' तथा राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' और अन्य रचनाएँ भी पढ़ी थीं । 'रंगभूमि' का सूरदास अंधा होते हुए भी अंत तक अन्याय-अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करता है । जैसे राही के 'आधा गाँव' में गंगौली की संघर्षशील जनता का यथार्थ चित्रण मिलता है ठीक उसी प्रकार बाणभट्ट की आत्मकथा का नायक बाण भी अपने कर्मशील जीवन में संघर्ष करता हुआ परिलक्षित होता है ।

मैंने एम्.फिल. के शोध-विषय के चयन के संदर्भ में श्रद्धेय डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया । आपने मुझे अनेक सशक्त कथाकारों एवं उनकी रचनाओं के नाम सुझाएँ । इसी सिलसिले में मैंने मार्क्सवादी और प्रगतिशील विचारधारा के उद्गायक एवं कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के उपन्यास 'समर शेष है' और 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' को पढ़ा । इन दो रचनाओं को पढ़ने के पश्चात मैं अत्यंत प्रभावित हुआ । 'समर शेष है' उपन्यास का कथा-नायक जो अपनी कम उम्र से ही संघर्ष करने लगता है वह आज लोगों को अविश्वसनीय लगता है । लेकिन 'समर शेष है' का कथानक पूरा विश्वसनीय सिद्ध होता है । प्रस्तुत उपन्यास जीवन में किस प्रकार से संघर्षों का सामना करना पड़ता है और उन समस्याओं का समाधान किस प्रकार करना चाहिए इस बात का एहसास भी दिलाता है । हम भी जीवन में संघर्ष करते हैं लेकिन कथानायक के संघर्ष और हमारे संघर्ष में काफी असमानता दृष्टिगत होती है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' के मतीन की संघर्ष गाथा तथा बुनकरों की दयनीय स्थिति की तो अलग ही पहचान है ।

बिस्मिल्लाह जी की इन दो रचनाओं को पढ़ने के पश्चात मैंने सौभाग्य से मिले और अपने लिए एक उपलब्धि सिद्ध हुए पूजनीय डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया और आपके सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए ''अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना'' विषय का चयन किया ।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उजागर हुए थे -

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह का बचपन से अब तक का जीवन कैसे बीता है ?
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने किन विषयों पर औपन्यासिक लेखन किया है ?
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का केंद्रीय तत्व क्या है?

4. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में किस वर्ग के तथा किस समाज के पात्रों के संघर्ष का चित्रण अत्यधिक हुआ है ?
5. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना के कौन-कौन से आयाम प्राप्त होते हैं?
6. अब्दुल बिस्मिल्लाह के पात्र क्या अपने जीवन-संघर्ष में सफल होते हैं?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है ।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है, ''अब्दुल बिस्मिल्लाह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' । इस अध्याय के अंतर्गत मैंने अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षेप में परिचय दिया है । इसमें उनकी जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, मित्र-मंडली, बनारस से दिल्ली आना, आंदोलनों में सहभाग आदि बातों का विवेचन किया है । साथ-साथ उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट करके उनके कृतित्व अर्थात उनकी साहित्य यात्रा के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है । अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है, ''अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का विषयगत विवेचन'' । इस अध्याय के अंतर्गत अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दिया है । इसमें उपन्यास के प्रकाशन क्रम से लेकर उपन्यास के मूल विषय, भाषा, संवाद, शैली, तथा उद्देश्य आदि बातों का विवेचन किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर समन्वित निष्कर्ष दिए हैं ।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों में संघर्ष-चेतना'' । इस अध्याय के अंतर्गत मैंने 'संघर्ष' और 'चेतना' शब्द के अर्थ, परिभाषा, स्वरूप तथा संघर्ष-चेतना की परिभाषा और स्वरूप आदि बातों का विवेचन किया है । तत्पश्चात विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना का विवेचन-विश्लेषण किया है । विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना का मुख्य कारण प्रस्तुत किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं ।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों में मुस्लिम जीवन-संघर्ष'' । प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मुस्लिम जीवन-संघर्ष की पृष्ठभूमि, मुस्लिमों का हिंदुस्तान में आगमन,

मुगल सल्तनत, अंग्रेजी राज, आजादी की प्राप्ति, देश-विभाजन की त्रासदी और मुस्लिम जीवन-संघर्ष आदि बातों का विवेचन करके विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त मुस्लिम जीवन से संबंधित संघर्ष के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है । अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं ।

पंचम अध्याय का शीर्षक है -''विवेच्य उपन्यासों में संघर्ष-चेतना के विविध आयाम'' । इसमें विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना के विविध आयाम, जैसे अर्थ से संबंधित, समाज से संबंधित, धर्म से संबंधित, राजनीति से संबंधित, जिंदगी से संबंधित संघर्षों के विविध आयामों का विवेचन किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं ।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया गया है । इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को दिया गया है । तत्पश्चात परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है ।

इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :-

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध अब्दुल बिस्मिल्लाह द्वारा लिखित औपन्यासिक कृतियों में चित्रित विभिन्न संघर्षों पर केंद्रित है । हिंदी साहित्य में अब्दुल बिस्मिल्लाह द्वारा चित्रित संघर्ष-चेतना का इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अध्ययन पहली बार संपन्न हुआ है ।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में संघर्ष-चेतना के अलग-अलग आयामों का सूक्ष्मता से अध्ययन करके सर्वहारा तथा निम्न-मध्यवर्गीयों में प्राप्त संघर्ष-चेतना को बारिकी से व्याख्यायित किया है जो हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में अपने आप में पहला अनुसंधान कार्य है ।

*****

IV

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के आत्मीय, प्रेरक एवं कुशल निर्देशन का फल है । आपने अनेक व्यस्तताओं के होते हुए मेरी त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है । विशेषकर आपने दीपावली जैसे वार्षिक आलोक पर्व में भी अपना समय निकालकर मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में मार्गदर्शन किया है । अक्सर लोग कहते हैं शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना असंभव है लेकिन मैं समझता हूँ शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना ही औचित्यपूर्ण सिद्ध होता है लेकिन इससे भी आगे की बात दिल में निहित कृतज्ञता है । अत: मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में भी आपके आशीर्वचन और मार्गदर्शन का अधिकारी बनने की क्षमता प्राप्त हो ।

मैंने जिस विषय पर अनुसंधान कार्य किया उन कृतियों के लेखक **अब्दुल बिस्मिल्लाह जी** तथा उनके घनिष्ठ एवं आत्मीय मित्र, सहपाठी **डॉ. चंद्रदेव यादव जी** के सहयोग के अभाव में मेरे शोध-कार्य की संकल्पना ही नहीं कि जा सकती । अत: बिस्मिल्लाह जी ने तथा यादव जी ने समय-समय पर अनेक व्यस्तताओं से समय निकालकर सहयोग दिया । अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मुझे शिक्षा के लिए भेजनेवाले, मेरे लिए अपार कष्ट उठानेवाले मेरे माता-पिता का आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देता रहा और आजीवन प्रेरणा देता रहे यही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । मैं आजन्म उनके ऋण में रहूँगा । **माता-पिता** के अलावा मेरी आर्थिक स्थिति को जानकर मेरे जीजाजी **अरूण कादुळे** तथा **दीदी** ने समय-समय पर आर्थिक सहयोग दिया और साथ-साथ आशीर्वाद और प्रेरणा भी । अत: मैं उनका भी आजीवन ऋणी हूँ ।

आदरणीय डॉ. के.पी. शहा, डॉ. सुनील कुमार लवटे जी, डॉ. पी.एस. पाटील, डॉ. आशा मणियार, डॉ. यादवराव धुमाळ जी, प्रा. लालासाहेब घोरपडे और प्रा. एल.आर. पाटील आदि का स्नेह मेरे साथ रहा । अत: मैं इनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

श्री. मते जी.बी. (संचालक, अनंती कृषि केंद्र, बार्शी) जिन्होंने मुझे आर्थिक ही नहीं बल्कि समय-समय पर शिक्षा के संदर्भ में भी सुझाव दिए । उन्होंने एम्.फिल. प्रवेश से

लेकर आज तक आर्थिक सहयोग दिया अत: मैं उनका आजन्म ऋणी रहूँगा । मेरे शुभाकांक्षी और आदर्श मित्र **श्री. साताप्पा चव्हाण**, (विभागीय रिसर्च फैलो, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय), पंडित बन्ने, बाळासाहेब दास, राजाभाऊ जाधवर, सन्मुख मुच्छटे, हणमंत कोल्हाळ, विकास शेटे, प्रकाश शेटे, मनोहर भंडारे, सुरेश शिंदे, शिवाजी गुरव, भास्कर भवर आदि का भी और अन्य एम्.फिल. के साथी और सहेलियों का भी इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में सहयोग प्राप्त हुआ है । अत: इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे **बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर** तथा **न्यू कॉलेज, कोल्हापुर** से हुई । अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का और हिंदी विभाग के बाबू अनिल और कांबळे मामा का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है । अत: मैं इन सबका ऋणी हूँ ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले **अक्षर टायपिंग के संचालक गिरीधर सावंत** और **श्रीमती पल्लवी सावंत** का भी मैं आभारी हूँ । साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सब के प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

शोध-छात्र

(श्री. भाऊसाहेब नवनाथ नवले)

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 18 DEC 2001